८२२ आणंद, पौष वदी ११, मंगल, १९५४

आज सबेरे यहाँ आना हुआ है। लीमडीवाले भाई केशवलालका भी आज यहाँ आना हुआ है। भाई केशवलालने आप सबको आनेके लिये तार किया था सो सहजभावसे था। आप सब कोई न आ सके यों विचार कर इस प्रसंगपर चित्तमें खिन्न न होवें। आपके लिखें पत्र और चिट्ठी मिले हैं। किसी एक हेतुविशेषसे समागमके प्रति अभी विशेष उदासीनता रहा करती थी, और वह अभी योग्य है, ऐसा लगनेसे अभी मुमुक्षुओंका समागम कम हो ऐसी वृत्ति थी। मुनियोंसे कहें कि विहार करनेमें अभी अप्रवृत्ति न करें; क्योंकि अभी तुरत प्रायः समागम नहीं होगा। पंचास्तिकाय ग्रंथका विचार ध्यानपूर्वक करें।

८२९ मोरबी, माघ वदी ०)), १९५४

मुमुक्षुता जैसे दृढ़ हो वैसे करें; हारने अथवा निराश होनेका कोई हेतु नहीं है। जीवको दुर्लभ योग प्राप्त हुआ तो फिर थोड़ासा प्रमाद छोड़ देनेमें जीवको उद्विग्न अथवा निराश होने जैसा कुछ भी नहीं है।

८३०　　मोरबी, चैत्र वदी १२, रवि, १९५४

'पंचास्तिकाय' ग्रंथ रजिस्टर्ड बुक-पोस्टसे भेजनेकी व्यवस्था करें।

आप, छोटालाल, त्रिभोवन, कीलाभाई, धुरीभाई और झवेरभाई आदिको 'मोक्षमार्गप्रकाश' आदिसे अंत तक पढ़ना अथवा सुनना योग्य है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भावसे नियमित शास्त्रावलोकन कर्तव्य है।

८३४ ववाणिया, ज्येष्ठ सुदी ६, गुरु, १९५४

महद्गुणनिष्ठ स्थविर आर्य श्री डुंगर ज्येष्ठ सुदी ३ सोमवारकी रातको नौ बजे समाधिसहित देहमुक्त हुए।

मुनियोंको नमस्कार प्राप्त हो।

अनंत अंतराय होनेपर भी धीर रहकर जो पुरुष अपार महामोहजलको तर गये उन श्री पुरुष भगवानको नमस्कार।

अनंतकालसे जो ज्ञान भवहेतु होता था, उस ज्ञानको एक समयमात्रमें जात्यंतर करके जिसने भवनिवृत्तिरूप किया उस कल्याणमूर्ति सम्यग्दर्शनको नमस्कार।

'आत्मसिद्धि'की प्रति तथा पत्र प्राप्त हुए।

निवृत्तियोगमें सत्समागमकी वृत्ति रखना योग्य है।

'आत्मसिद्धि'की प्रतिके विषयमें आपने इस पत्रमें विवरण लिखा, तत्संबंधी अभी विकल्प कर्तव्य नहीं है। उसके बारेमें निर्विक्षेप रहें।

लिखनेमें अधिक उपयोगका प्रवर्तन अभी शक्य नहीं है।

---

८५७ ईडर, मार्गशीर्ष वदी ३०, गुरु, सबेरे, १९५५

ॐ नमः

आत्मार्थी भाई अंबालाल तथा मुनदासके प्रति, स्तंभतीर्थ।

मुनदासका लिखा हुआ पत्र मिला। वनस्पतिसंबंधी त्यागमें अमुक दससे पाँच वनस्पतिका अभी आगार रखकर दूसरी वनस्पतियोंसे विरत होनेमें आज्ञाका अतिक्रम नहीं है।

आप सबका अभी अभ्यासादि कैसा चलता है?

सद्देवगुरुशास्त्रभक्ति अप्रमत्ततासे उपासनीय है।

श्री ॐ

८५९ ईडर, पौष सुदी १५, गुरु, १९५५

ॐ

आपका लिखा एक पत्र तथा मुनदासके लिखे तीन पत्र मिले हैं।

वसोमें ग्रहण किये हुए नियमके अनुसार मुनदास वनस्पतिके बारेमें विरतिरूपसे वर्तन करें। दो श्लोकोंके स्मरणके नियमको शारीरिक उपद्रवविशेषके बिना सदा निबाहें। गेहूँ और घीको शारीरिक हेतुसे ग्रहण करनेमें आज्ञाका अतिक्रम नहीं है।

किंचित् दोषका संभव हुआ हो तो उसका प्रायश्चित्त श्री देवकीर्ण मुनि आदिके समीप लेना योग्य है।

आपको अथवा किन्हीं दूसरे मुमुक्षुओंको नियमादिका ग्रहण उन मुनियोंके समीप कर्तव्य है। प्रबल कारणके बिना उस संबंधमें पत्रादि द्वारा हमें सूचित न करके मुनियोंसे तत्संबंधी समाधान समझना योग्य है।

ॐ

८९० बंबई, भाद्रपद सुदी ५, रवि, १९५५

ॐ

श्री अंबालाल आदि मुमुक्षुजन,

आज-दिन तक आपके प्रति तथा आपके समीपवासी बहनों और भाइयोंके प्रति योगके प्रमत्त स्वभावसे जो कुछ अन्यथा हुआ हो, उसके लिये नम्रभावसे क्षमायाचना करते हैं। ॐ शांतिः

८९९ मोहमयी, कार्त्तिक सुदी ५, बुध, १९५६

ॐ

सर्व सावद्य आरंभकी निवृत्तिपूर्वक दो घडीसे अर्ध प्रहरपर्यंत 'स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा' आदि ग्रंथकी नकल करनेका नित्यनियम योग्य है। (चार मासपर्यंत।)

८८६ मोहमयी क्षेत्र, श्रावण सुदी ७, १९५५

ॐ

श्री 'पद्मनंदी शास्त्र'की एक प्रति किसी अच्छे व्यक्तिके साथ वसो क्षेत्रमें मुनिश्रीको भेजनेकी व्यवस्था करें।

बलवान निवृत्तिवाले द्रव्य-क्षेत्रादिके योगमें आप उस सत्शास्त्रका वारंवार मनन और निदिध्यासन करें। प्रवृत्तिवाले द्रव्यक्षेत्रादिमें वह शास्त्र पढ़ना योग्य नहीं है।

जब तीन योगकी अल्प प्रवृत्ति हो, वह भी सम्यक् प्रवृत्ति हो तब महापुरुषके वचनामृतका मनन परम श्रेयके मूलको दृढ़ीभूत करता है; क्रमसे परमपदको संप्राप्त करता है।

चित्तको विक्षेपरहित रखकर परमशात श्रुतका अनुप्रेक्षण कर्तव्य है।